अध्याय - सात

उपसंहार

साठोत्तरी मिथक कविताओं को नये युग के साथ जोड़ा जा सकता है, मानव जाति के समग्र जीवन के लगभग सभी देशों में नये विकास के आयाम को आह्वान दिया गया, इस काल में अन्धश्रद्धा के अतिरिक्त बुद्धिवाद, जन्म-मरण के अलावा कर्म पर अधिक बल दिया गया है । जातिवाद की समस्या, धर्म की रक्षा, राष्ट्र के प्रति प्रेम, इतिहास के गौरव को सुदृढ़ करके भारत की उन तमाम निर्बल एवं सभी वर्ग के लोगों में आत्मविश्वास को मजबूत करने का प्रयास किया गया है । इन समस्याओं के समाधान में देश के सामने कई बड़े संकट भी आये, किन्तु राष्ट्र उन संकटों में भी अटल रहा, इन्हीं दिनों नारी उद्धार, पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों की समस्याओं को विशेष महत्व देते हुए, शारीरिक, आध्यात्मिक शक्ति के संचयन एवं जन कल्याण की भावना का प्रचार - प्रसार करते हुए देश में दूर - दूर तक बसे हुए लोगों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, चेतना का विकास करते हुए, सम्पूर्ण सहयोग के साथ, एक सूत्र में बँध कर पूरे राष्ट्र के विकास में हाथ बँटाने का आह्वान भी इस युग में पाया जाता है । वर्तमान समस्याओं से जूझते हुए हमारे देश के तथा विश्व के अनेक चिन्तकों एवं कवियों ने अपनी काव्य दृष्टि देकर मिथक के माध्यम से इस भाव बोध को नयी अर्थवत्ता प्रदान की है ।

मिथक के सम्बन्ध में प्रत्येक विद्वानों का अलग - अलग मत है, " रमेश कुन्तल मेघ " ने मिथक और स्वप्न में कहा है, कि मिथ किसी जाति की धरोहर है, जो किसी कवि की सामाजिक और व्यक्तिगत स्वप्न तथा कल्पना में से छनकर मिथकीय रचनाओं में पुनः स्थापित होते हैं, कवि के काव्य में ये मिथक के पात्र वर्तमान समय में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन के रंग रूप और प्राण शक्ति को प्राप्त करके शब्द अभिव्यक्ति में फिर से जीवित हो उठते हैं, और इसी अर्थ में साठोत्तरी हिन्दी कविता के मिथकीय पात्र नये युग के वाहक और संचालक बन बैठे हैं, जो व्यक्ति के वर्तमान जीवन में हो रहे अन्तर्विरोधों तथा अन्तर्द्वन्द्व की परिस्थितियों को वर्तमान जीवन के विभिन्न अन्तर्विरोधों एवं द्वन्द्वपूर्ण स्थितियों में समानता है, वर्तमान जीवन के इन मार्मिक प्रसंगों को पौराणिक

आख्यानों के माध्यम से कवियों ने आधुनिक जन - जीवन के संघर्षों, शोषण, अत्याचार, नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट तथा घोर व्यक्तिवादिता, शंका, कुशंका, व्यक्ति अहं युद्ध की विभीषिका, छलकपट, दाँव-पेंच जैसी घटनाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करके एक महत्त्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया है ।

साठोत्तरी हिन्दी काव्य में पौराणिक आख्यानों की प्रासंगिक प्रस्तुतियों के द्वारा, मध्यकाल के पौराणिक आख्यानों पर आधारित कई प्राचीन महाकाव्यों की मिथकीय कथा वस्तु ने प्रमुख मिथकीय पात्रों को वर्तमान सन्दर्भों के अनुकूल ढल जाने में मदद की है, इन्हीं पौराणिक आख्यानों के प्रमुख पात्रों के द्वारा नयी प्राण शक्ति ग्रहण करके वर्तमान युग की चिन्ताओं के अनुरूप सामाजिक चेतना में नये संशोधन, नये अन्वेषण के साथ परिवर्द्धन और परिष्करण करने में विशेष योगदान दिया है, जिसके द्वारा नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच के सेतु को बनाये रखने में काफी मदद मिलती है, वैसे ये गौण मिथकीय पात्र साम - सामयिक जनमानस के प्रतीक है । नव विकसित धारणा के अनुसार मिथक आकांक्षा की अभिव्यक्ति के रूप में आते हैं, वहाँ मिथक प्रतीक मनुष्य की सृजनशीलता का मानवीय रूप माना गया है, भारतीय मिथकों में हमारा निकट परिचय, राम - कृष्ण, शिव - सीता, राधा, द्रौपदी, रावण, धृतराष्ट्र, गान्धारी, गुरू द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, अर्जुन, भीम, हनुमान, अश्वत्थामा, आदि मिथकीय पात्रों से इनकी रचना के मूल में, इनके चरित्र-चित्रण के मूल में मात्र जन - विश्वास ही नहीं है, बल्कि इन पात्रों के द्वारा, मानव की सृजनशक्ति सक्रिय होती है ।

इसके अतिरिक्त कई अन्य पात्र जैसे उर्मिला, यशोधरा, कैकेयी, युयुत्सु, विदुर, इन पात्रों के द्वारा कवियों को इनके माध्यम से नवीन उद्भावना की विशेष सुविधा प्राप्त होती है, इन पात्रों के आधार संहिता में आधुनिक युग बोध दिखाई देता है, जब कि मध्यकाल में यही पात्र मिथकों के रूप में सामन्ती पर्दे के पीछे, कार्यरत थे, उर्मिला द्वारा जनकल्याण की भावना का प्रचार करना, युद्ध में लूट - खसोट की प्रवृत्ति की निन्दा करना, और युद्ध में घायल हुए लोगों की मरहम पट्टी करना, युद्ध के प्रति सहानुभूति, और देश प्रेम जैसी भावनायें, वर्तमान युग के भाव-बोध को ही स्थापित करती हैं । इसी प्रकार सीता द्वारा वन में रहने वाली

जातियों को सुसंस्कृत करना, लघु कुटीर उद्योग लगाने की प्रेरणा देना, कैकेयी द्वारा भरत के माध्यम से आर्य - संस्कृति के प्रचार - प्रसार में राम की सहायता करना, देश की सीमाओं की सुरक्षा के प्रति चिन्ता प्रकट करना, रामराज्य लाने का सपना, राज्य की नींव को मजबूत करना, आदि सारे के सारे प्रयत्न आधुनिक भारतीय जीवन की जरूरतों का प्रचार मात्र ही हैं, श्रद्धा और मनु के माध्यम से सृष्टि की रचना, जैसे अनेक पात्रों और ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा भारत में फैली अन्धश्रद्धा, कर्मकान्ड के अलावा कर्म करने पर बल दिया गया है, वास्तव में यही वर्तमान युग की माँग है, इन सारी समस्याओं का समाधान इन पौराणिक पात्रों के द्वारा भारत के उन करोड़ों लोगों तक पहुँचाने में मदद मिलती है ।

भारत में ही नहीं बल्कि पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिकता एवं उसकी प्रस्तुतियाँ विश्व की अनेक सुसंस्कृत भाषाओं में देखने को मिलता है, जिनसे प्रेरणा ग्रहण कर कवियों ने जातीय गौरव और नयी संस्कृति को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले कई ऐसे विशिष्ट महाकाव्यों की रचना हुई । किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है, कि भारत का पौराणिक आख्यान विश्व के किसी भी देश के पौराणिक आख्यान से कहीं अधिक समृद्धिशाली और श्रेष्ठ माना गया है, इस सम्बन्ध में भारतीय पुराणों की विशेष भूमिका रही है, भारतीय पौराणिक आख्यानों ने सम्पूर्ण भारतीय काव्य को अपनी उदान्त और जीवन्त प्रेरणा से न केवल उपजीव्य काव्य वस्तु प्रदान की हैं, इसके साथ ही जीवनगत् महत् संदेशों और अपनी मनोरम कल्पना पूर्ण विविध शैलियों से अनुप्राणित भी किया है, प्रस्तुत अध्ययन से यह सिद्ध होता है ।

भारतीय पुराणों में श्रेष्ठ "श्रीम द् भागवत्" की कथा समस्त पुराणों में अधिक प्रसिद्ध और सारे भारत में समादृत है, इसमें जो कवित्व है, वह बहुत ही उच्च कोटि का है, "रामायण" और "महाभारत" ने भी भारतीय साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया है, "श्रीमद् भागवत" पुराण के कवित्व का प्रभाव साठोत्तरी हिन्दी कवियों पर तो पड़ा ही परन्तु इसके साथ ही मध्यकालीन हिन्दी कविता के उन्नायक सर्वश्रेष्ठ प्रबन्धकार "तुलसी" के "राम चरित मानस" पर स्पष्टत:

दिखाई पड़ता है, इससे यह कहना आवश्यक नहीं होगा, कि "श्रीमद् भागवत" केवल एक धर्मग्रन्थ नहीं है, बल्कि यह एक उच्च कोटि की कविता के सौन्दर्य से परिपूर्ण एक सुन्दर काव्य कृति भी माना गया है, पुराण की परम्परा बहुत प्राचीन युग से चली आ रही है, अनेक वैदिक आख्यानों का मूल रूप से पुराणों में सुरक्षित रहना भी पुराणों की प्राचीनता पर प्रकाश डालता है, शुनः शेप देवादि तथा राजा सुदास के आख्यान इसी प्रकार के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

साठोत्तरी हिन्दी काव्य में पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिकता और उनकी प्रस्तुतियाँ मुख्य रूप से प्राचीन वैदिक युग में ही समृद्ध हो चुकी थी, वैदिक साहित्य के समान युग का समादर भी उसे प्राप्त हुआ था, इससे इस बात पर विश्वास किया जा सकता है, कि एक ओर तो वैदिक ऋषिवेद सूक्तों का सृजन कर रहे थे, और दूसरी ओर समाज के विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्ति एवं सामान्य जनता के कवियों ने जन भाषा में "गद्य" और पद्य" दोनों में राष्ट्रीय वीर पुरूषों का चरित्र गाया होगा, तथा इस प्रकार बिखरी हुई घटनाओं को इक्ट्ठा किया होगा, प्राचीन काल में लोक - गायकों द्वारा गाये गये, तथा वर्णन किये गये, चरितों का कुछ रूप हमें वैदिक साहित्य में देखने को मिल जाता है, इस प्रकार के आख्यानों का अधिक निखरा हुआ रूप हमें "रामायण" महाभारत" एवं पुराणों में उपलब्ध होता है।

"रामायण" महाभारत" का प्रचार - प्रसार विभिन्न - भाषाओं में हुआ, तथा इसके साथ ही राम कथा का क्रमिक विकास भी हुआ, जहाँ तक साठोत्तरी हिन्दी काव्य में पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिक प्रस्तुतियों के सन्दर्भ का प्रश्न है, वहाँ इस काल में कविता दो तरह के कवियों द्वारा लिखी जा रही थी, वे कवि जो पहले से लिख रहे थे, दूसरे वे जो साठ के आस - पास लिखना प्रारम्भ कर चुके थे, इन कवियों में नरेश मेहता, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कुंवर नारायण, प्रभाकर माचवे, विजय देव नारायण साही, दुष्यन्त कुमार, जगदीश गुप्त, बलदेव वंशी, जैसे कवि प्रमुख थे कुछ कवियों ने पौराणिक ऐतिहासिक तथा मिथकीय रचनाओं में एकलव्य, कर्ण, अहिल्या, शबरी, द्रौपदी, जैसे पात्रों के माध्यम से अछूतोद्धार और नारी उद्धार की प्रेरणा दी गई है। इन पात्रों के द्वारा आदर्श के प्रति जनजीवन में आस्था, संघर्षशक्ति और त्याग तथा बलिदान की भावना को प्रचारित किया गया है, विशेष रूप से ये पात्र दो आद्य भावनाओं के क्रमिक विकास के प्रतीकित करते हैं।

एकलव्य और अहिल्या, गांधारी, कुन्ती, जैसे पात्रों ने नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट में जागरूकता पैदा करके शान्त तथा निराश होकर अपने आपको आत्म-समपर्ण कर देते हैं, जबकि द्रौपदी, कर्ण, इन मूल्यों का समर्थन देने वालों का विरोध करते हैं, यही नहीं संघर्ष करके उनके विनाश की भूमिका बनाकर उसे समाज के सामने समर्पित करते हैं, इसी प्रकार एक आद्य प्रतीक रूप में विदुर, भीष्म,द्रोण के द्वारा विकसित हुआ है, इसी प्रकार ये तीनों पात्र अर्थ के गुलाम है, तथा इसके साथ ही वे इससे ग्रस्त होते हुए भी मनीषावान, न्याय - प्रेमी और गुणग्राही भी हैं, किन्तु तीनों पात्र अपनी अर्थ दासता के कारण अपनी कुंठित, तथा कलंकित जीवन जीने के लिए अभिशाप्त हैं। ये तीनों पात्र वर्तमान युग के बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतीक हैं। और अपने किये गये उन कर्मों के प्रति चिंतित तथा विवश हैं। द्रोण ऐसे ही आधुनिक युग का कर्मठ व्यक्ति का प्रतीक है, जो सत्ता में इस लिए जुड़ा है, क्यों कि वहाँ उसका स्वार्थ निहित है, इसके साथ ही वह सही मार्ग प्रस्तुत करते हुए उनके विरूद्ध लड़ाई भी लड़ता है, नमक का धर्म निभाते हुए, वह वर्तमान युग के विसंगति - ग्रस्त व्यक्ति का प्रतीक है, विदुर और भीष्म की स्थिति भी यही है, युधिष्ठिर अवसरवादिता का शिकार, अस्थिर, पलायनवादी, अव्यवहारी, बुद्धिजीवी, का प्रतीक है, जो सदाचारी जीवन जीने का ढोंग किये हुए है, किन्तु वह आदर्शवादिता के बीच फँसकर अभिशाप्त तथा पश्चाताप ग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहा है, भीम उद्दत बलान्ध व्यक्ति का प्रतीक है, अर्जुन निष्काम कर्मशील व्यक्ति है, जो अन्य लोगों के कहने पर चलता है, अच्छे - बुरे पाप - पुन्य के भेद से मुक्त वह अन्ध - विश्वासी व्यक्ति का प्रतीक है, कृष्ण ऐसे राजनैतिक नेता के प्रतीक है, जो सामूहिक जनकल्याण के लिए पुरानी परम्पराओं से अलग होकर नयी परम्परा की नींव डालने का प्रयास किया है, इसके साथ ही वे सत्य और असत्य के बीच एक अभेद रेखा खींचते हैं, दुर्योधन, कंस, रावण, अश्वत्थामा, क्रूर, हिंसक, साम्राज्य - वादी और पूँजीवादी शक्तियों के प्रतीक हैं, कर्ण और कुन्ती इन दोनों पात्रों में कर्ण आज के अछूतोद्धार का प्रतीक है, कुन्ती आज की नारी की मनोदशा को उजागर करने वाली नारी का प्रतीक है ।

भारतीय संस्कृति के लोक नायक राम जो मर्यादावादी पुरूषोत्तम भी है, जो सत्य पर असत्य और न्याय पर अन्याय को विजय प्राप्त करते देख व्याकुल हो उठते हैं, कर्ण निम्न जाति के स्वाध्यायशील प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति का प्रतीक है,

जो धनुर्विधा के क्षेत्र में समान अधिकार चाहता है। इसी तरह एकलव्य भी इसी कोटि के व्यक्ति का प्रतीक है, किन्तु ये दोनों धर्नुधर परम्परा के प्रति भक्ति - भाव से समर्पित है, जड़वादी परम्परा को बनाये रखने के लिए वह अपनी प्रतिभा का गला घोंट देते हैं । इसके अतिरिक्त कर्ण शोषित, दलितवर्ग के ऐसे प्रतिभा सम्पन्न संघर्षशील व्यक्ति का प्रतीक है, जो अभिजात वर्ग छल - कपट को सहन करते हुए मारा जाता है, परन्तु अपने उदान्त गुणों से एक आदर्श प्रस्तुत कर जाता है, अभिमन्यु के समान आज का युवा वर्ग ऐसे कई तरह के चक्रव्यूह में फँसा हुआ है, जिसमें से वह निकल नहीं पाता, ठीक इसी तरह अभिमन्यु भी वर्तमान युग में नयी पीढ़ी का प्रतीक है ।

भारतीय नारी मिथकीय पात्रों में कुन्ती, द्रौपदी, श्रद्धा, सीता, अहिल्या, राधा, उर्वशी, इड़ा, यशोधरा, देवकी, के माध्यम से नारी शील पर प्रश्नचिन्ह लगाए गए हैं । इनके द्वारा नारी उद्धार की भावना से प्रेरित होकर नारी को शरीर की अपेक्षा मन तथा आत्मा से मानने की प्रेरणा दी गई है, तथा इसके साथ ही इन नारियों के द्वारा नारी के गृहस्थ जीवन का विश्लेषण भी किया गया है, और इसी विश्लेषण के द्वारा नारी के उद्धार और उसके उत्थान में सहयोग को स्वीकार करने की प्रेरणा देता है, और इन्हीं पात्रों के द्वारा नारी जाति के प्रति हो रहे अत्याचार और उनके शोषण का विरोध किया गया है। नारी को उपभोग्य की वस्तु समझने वालों की घोर निंदा की गई है, इसी तरह अन्य कई नारी पात्र जैसे- उर्मिला, सुमित्रा, कैकेयी, मान्डवी, सावित्री, सीता, यशोधरा, सुभद्रा, कनुप्रिया, कौशिल्या, इन नारी पात्रों ने अपने पति के कर्तव्यों को पूर्ण करने में सहायक सिद्ध हुई हैं तथा इन नारी पात्रों के तप त्याग से श्रेष्ठ पद करने की प्रक्रिया में वह पति की मदद करती है । ये प्राचीन सभी मिथकीयवादी पात्र आज के जीवन में आयी विसंगतियाँ तथा व्यक्ति की कुन्ठा, संकीर्णता, एवं राष्ट्रीय भावनाओं में आयी गिरावट, नैतिक मूल्यों का पतन जैसे जटिल प्रश्नों को उजागर करते हैं, और नयी चेतना के प्रतीक बनकर इन प्रश्नों का समाधान करने में मदद करते हैं ।

इस युग में, इस प्रकार के पात्रों के लिए सामाग्री " महा भारत " और " भागवत " से प्राप्त हुई है, दुःशासन, कंस, जयचन्द्र, कृष्ण, देवकी, अर्जुन, प्रहलाद, वसुदेव, अक्रूर, जरासन्ध आदि पात्र, महाभारत, कंस का कारागार आदि स्थान

महाभारत के युद्ध में कृष्ण का शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा जैसी घटनायें इस काल की कविता में विभिन्न राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतीक बनकर उभरी हैं, इसी तरह अन्य पात्रों में व्यासमुनि, भीम, अर्जुन, हरिश्चन्द्र, शैव्या, शची, के द्वारा आज के मानवी मूल्यों के पतन को चित्रित किया गया है, कहीं - कहीं पर अन्य पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से नया कवि अपनी कुन्ठा को क्वांरी कुन्ती के प्रतीक का वस्त्र पहनाता है, आजादी के बाद भारत में राजनीतिक नेताओं और राष्ट्रीय प्रेम में आयी गिरावट, भाई भतीजावाद, जातिवाद, गरीबों का शोषण, उन पर होने वाले अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, झूठी मान्यतायें, बेकारी की समस्या, शासक और जनता के बीच की खाईं दिन प्रति दिन गहरी होती गई, जैसी ज्वलन्त समस्याओं को उठाया गया है ।

भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, एवं वर्तमान समय की सामान्य प्रवृत्तियों के द्वारा कुछ नयी चेतना एवं हो रही घटनायें, देश के हित के लिए चिंता जनक है, और इन समस्याओं को उत्पन्न करने वाली ताकतों का इरादा क्या है, इन्हे मदद कहाँ से मिल रही है, जैसी बातों का जिक्र करके उनसे किस ढ़ग से निपटा जा सकता है, इन समस्याओं को उठाया गया है, भारतीय जन - जीवन में युद्ध के प्रति वीर भावना धीरे - धीरे कम हुई है, और युद्ध के प्रति वैराग्य तथा युद्ध को टालने की भावना का विकास हुआ है, ऐसे अनेक कवियों ने युद्ध की इस विभीषिका, विध्वंसकारी, कोमल, मानवी सम्बन्धों के लिए विनाशकारी और सभ्यता, संस्कृति, कला - साहित्य के लिए अनिष्ठकारी माना है, किन्तु साठोत्तरी काव्य के सन्दर्भ में मानवजाति के लिए प्रेम अहिंसा, भाईचारा, शान्ति जैसी भावना को घातक मानकर युद्ध को अनिवार्य बुराई के रूप में भी स्वीकार किया गया है । युद्ध सम्बन्धी ऐसे अनुमान विश्व युद्ध के समय तथा मानवीय अस्तित्व पर आये संकट के कारण उत्पन्न हुई है, इसी विश्व की उन दो महान शक्तियों का अनुकरण अन्य राष्ट्र भी कर रहा है, और इस अनुकरण के पीछे, इन राष्ट्रों का उद्देश्य क्या है, उसे नये कवियों ने व्यक्त किया है ।

साठोत्तरी मिथकीय काव्य में राष्ट्रीय प्रेम की तलाश की गई है, साठोत्तरी मिथक कविता की मूल प्रकृति, कतिपय काव्य - संग्रह और कवि परिवेश की कविता, वामपंथी काव्य में राष्ट्रीय उत्कर्ष की अंतर्धरा, यथार्थ बोध की कविता, साठोत्तरी मिथकीय कविता की मूल संवेदना, आस्था की कविता, राष्ट्रवादी

नेताओं तथा मंत्रीयों के चरित्रों में आयी गिरावट, व्यवस्था के प्रति आक्रोश धर्म और राजनीति का कुचक्र, महत्वाकांक्षा, मानवमात्र की पोषक आर्थिक यंत्रणा का मार्मिक चिंतन, अमानवीय शोषण का उद्घाटन, भ्रष्टराजनीति, विश्वासघात, आतंकवाद, जातिवाद की राजनीति, एक राज्य से दूसरे राज्य का टकराव, समस्याओं से लदी और इस अभेद दुर्ग को तोड़ती कविता, पूँजीवादी व्यवस्था के प्रतिरोध, सामान्य प्रवृत्तियों का जिक्र, आम - आदमी की चेतना को छूने वाली कविता ऐसे अनेक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साठोत्तरी मिथक कविता की मीमांसा को प्रस्तुत किया गया है ।

साठोत्तर काव्य का बीजारोपण निराला की विद्रोही प्रकृति के साये में ही हुआ है, "अज्ञेय" द्वारा सम्पादित तार-सप्तक और सप्तकीय परम्परा की भूमिका भी साठोत्तरी कविता की दृष्टि से उल्लेखनीय रही है, सन्- 1954 में "जगदीश गुप्त" और रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पुस्तक - पत्रिका "नई - कविता" ने सर्वप्रथम साठोत्तर कविता के मानदन्डों की स्थापना का प्रयास किया।

साठोत्तरी कविता के बाद की कविता आठवें दशक तथा नवें दशक, एवं दशवें दशक की काव्य रचना में बहुत बड़ा अन्तर तो है, किन्तु प्रयोगवाद के बाद का काव्यान्दोलन साठोत्तरी कविता की पहचान रखता है, जो अकविता और विचार कविता की आवेशपूर्ण उमंगों के उदय - अस्त के साथ भी परिपूर्ण मानी गयी । साठोत्तरी कविता की सार्थक पहचान "अज्ञेय" से मिली, इस समय की कविता में एक अनोखा तेवर और उसकी मौलिकता थी । जैसे :- नया अर्थ, नये भाव, नयी अभिव्यक्ति, नया शिल्प, सामान्य आदमी की संवेदनाओं को छूती थी, नये सन्दर्भ, नये भाव बोध, और नये सौन्दर्यबोध से ओत - प्रोत थी ।

साठोत्तरी मिथक कविता के कई कवियों ने वर्तमान स्थिति को पौराणिक सन्दर्भों एवं प्राचीन आख्यानक काव्यों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को स्थायी महत्त्व दिया, इन कवियों में धर्मवीर भारती, नरेश कुमार मेहता, दुष्यन्त कुमार, रघुवीर सहाय, धूमिल, जगदीश गुप्त, जगदीश चतुर्वेदी, प्रभाकर माचवे, भारत - भूषण अग्रवाल, गिरिजा कुमार माथुर, अज्ञेय, रमेश चन्द्रशाह, वीरेन्द्र कुमार जैन, कुंवर नारायण, विनय अश्विनी पाराशर, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, बलदेव वंशी, डॉ० देवराज, विष्णु विराट, शैलेश जैदी, कवि महेन्द्र प्रताप, कुमार निकल, उदय प्रकाश, केवल गोस्वामी, मृत्युंजय उपाध्याय, शरण विहारी गोस्वामी,

सुरेन्द्र तिवारी, विजय देव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जैसे प्रमुख कवियों ने अपने हस्ताक्षरों के द्वारा मिथकीय काव्यों में राष्ट्र विरोधी ताकतों के खिलाफ अपने अभियान को आगे बढ़ाने का आह्वान किया है, और इसके साथ ही कई जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढ़ा गया है ।

साठोत्तरी मिथक कविता में दो प्रकार की काव्य धाराएँ प्रवाहित हुई है, एक मंझली पीढ़ी के मोह भंग का ज्वार उठाती हुई आगे बढ़ी है, तो दूसरी व्यवस्था के प्रति आक्रोश, विद्रोह, हड़ताल, नारेबाजी, बेकारी जैसी समस्या की आग का तप्त प्रवाह है । वस्तुतः साठोत्तरी मिथक कविता में अनेक प्रकार के तीखे-तलखी भरे, दबावों की प्रतिक्रियाओं का प्रतिबिम्ब है, इन्हीं दिनों कविता के क्षेत्र में कुछ ऐसे कवियों की पलटन आयी, जो साठोत्तरी कविता के लिए अत्याधिक घटना थी, इन कवियों में श्रीकान्त वर्मा, कैलाश वाजपेयी, रघुवीर सहाय, धूमिल, श्याम परमार, देवेन्द्र कुमार, सलिलगुप्त, सुरेश सलिल, ललित शुक्ल, जगदीश चतुर्वेदी, ओम प्रभाकर, ज्ञानेन्द्र पति, बैजनाथ, पारसनाथ सिंह, सुरेश समीर, तारादत्त उपाध्याय, आदि अनेक कवियों ने राष्ट्र के निर्माण में तथा देशवासियों की चेतना को समसामयिक जीवन सन्दर्भों में शक्ति प्रदान करने का प्रयास किया है । किन्तु यह सिलसिला अधिक दिन नहीं चल सका, क्योंकि कविता का मूल स्प यौन विकृति, जिघांसु - प्रवृत्ति और कुत्सित भाषा - शिल्प इसके उत्तरदायी रही हैं, इस तरह पश्चिम देशों की नकल के कारण हिन्दी - काव्य जगत में यह प्रयास निरर्थक प्रमाणित हुआ है ।

साठोत्तरी मिथकीय कविता का जो स्वर मौलिकता और विवेकशीलता के धरातल पर पनपा है, उनमें अधिकतर यथार्थ की अच्छी पकड़ होने के कारण युग चेतना से संघर्ष का स्वर सुनाई पड़ता है, साठोत्तरी हिन्दी कविता का अधिकांश सृजन मिथकीय है, फिर भी जहाँ गहराई है, वहाँ अनुभूति और अभिव्यक्ति की अभि व्यंजनाएँ मार्मिक और उच्च कोटि की बन पड़ी है, साठोत्तरी पीढ़ी के रचनाकारों ने अधिकांश कविताएँ व्यंग्य और कटाक्षमय वाणी में अभिव्यक्त किया है ।

साठोत्तरी मिथक कविता में आठवें, नवें और दशवें दशक की युग - चेतना का बहुविध स्प उभरा है, आज की कविता ने आम आदमी के भीतर के

देश भक्त को खोजने का प्रयास किया है, आज की नयी कविता काफी विस्तृत है, वर्तमान काव्य - सृजन का विशिष्ट आग्रह पौराणिक पात्रों के द्वारा शोषण को पूरी ईमानदारी के साथ बेनकाब करके उसके विरूद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाना है, अव्यवस्था और अस्थिरता की जीवन स्थितियों पर विजय पानें की प्रबल आकांक्षा समकालीन कविता की अपनी मौलिकता है । इस संदर्भ में कई प्रमुख हस्ताक्षरों ने अपना स्वर दिया है, जिनमें नीलम श्रीवास्तव शलभ, श्रीरामसिंह, विनय, वेणु गोपाल, ज्ञानेन्द्र पति, निर्भय मलिक, सुरेश चन्द्र गुप्त, हरिवंश अनेजा, विष्णु खरे, कमलेश, देवेन्द्र कुमार, ऋतुराज, सुन्दरलाल कथूरिया आदि है ।

प्रत्येक युग की अपनी - अपनी आधुनिकता रही है, और यही आधुनिकता ने अर्थबोध की नवीनता की सत्ता को प्राचीनता पर प्रस्थापित करने का कार्य कर रही है, वर्तमान युग विज्ञान का युग है, यंत्र का युग है, प्रयोग का युग है, और इसी युग पर हमारी अपनी आधुनिकता निर्भर है, आधुनिल युग बोध के निर्माण में वैज्ञानिक उपलब्धियों की अपनी सत्ता है, दुनियाँ भर में नयी नयी घटनायें हो रही है, ये घटनायें चाहे, राजनीति में हो, और चाहे राज्य की हो, राष्ट्र की हों, हर स्तर पर वर्तमान भावबोध, अराजकता, विसंगति, मूल्यहीनता, अस्तव्यस्त, और पतनोन्मुखी संस्कृति, साहित्य, कला, सभी क्षेत्रों में काव्य - प्रवृत्ति के मूल में आधुनिकता बोध का विशद और विविध परिदृश्य सक्रिय और सचेष्ट रहा है ।

साठोत्तरी मिथक कविता के द्वारा प्रस्तुत -शोध प्रबन्ध में कई प्रमुख बातों को वाणी दी गई है, स्वार्थ परायणता की अंधी दौड़, अराजकता की बढ़ती आँधी, अपराधों और अपराधियों की बढ़ती संख्या, गाँव से शहर की तरफ पलायन, जोड़ - तोड़ की राजनीति, देश भक्ति की भावना में आयी कमी के कारण चिन्ता, नेताओं का नैतिक पतन, दूसरे प्रजातंत्र की तलाश, जनचेतना का उभरता स्वर, आतंकवाद पर विजय प्राप्त करना, देश को टुकड़े-टुकड़े न होने देना, अन्याय के विरूद्ध संघर्ष की चेतना, आर्थिक विषमता को दूर करना, भारत के गौरव को बढ़ाना, मानव - मूल्यों के विघटन, घरेलू सम्बन्धों में आयी तिराड़, बैभवशाली जीवन के प्रति चिन्ता, विदेशी चीजों का सेवन, युवा पीढ़ी में आयी नशीले पदार्थों के सेवन से चिन्ता, छलकपट का बढ़ता प्रभाव, खोखली शिक्षा प्रणाली, नौकरशाही की

भर्त्सना, योग्यता के आधार पर चयन नहीं, सिफारिश, रिश्वत का बढ़ता प्रकोप, बेरोजगारी की समस्या, श्रमिक वर्ग का शोषण, शोषण के विरुद्ध विद्रोह, समस्याओं से घिरा जीवन परिवेश, घुटन, निराशा - कुन्ठा - दर्द महंगा न्याय, साम्प्रदायिक दंगे, शोषितों की दुर्दशा पर चिन्ता, राष्ट्रीय आत्म - निर्भरता पर बल, राष्ट्र निर्माण पर बल, मातृ-भूमि प्रेम, जैसी समस्याओं वेदनाओं को उठाया गया है ।

धार्मिक क्षेत्र में हो रहे प्रपंच, धर्म को राजनीति का हत्थकन्डा बनाकर जनता को धर्म जनूनी बनाना, उन्हे धर्म के साथ हिंसा जैसी प्रवृत्ति को नकारा गया है, और आत्म - प्रसार तथा जन कल्याण को प्रोत्साहन दिया गया है, राजनीतिक क्षेत्र में इन्होंने पराई पीड़ा को अनुभव करने वाले, लोक - सेवक, लोक रंजक, तथा नियम पालक राजनेता के चुनाव का निवेदन किया है, लोक विरोधी, असक्षम, क्रूर, अत्याचारी और अन्यायी शासक या राजनेता के विरोध के लिए, सतत संघर्षशील रहने के लिए, और समय आने पर प्राण देने तक तैयार रहने का त्याग इन मिथकीय रचनाओं में दिया गया है, सामाजिक क्षेत्र में किस कुल में जन्म हुआ, इस आधार को छोड़कर कर्म के आधार पर ऊँच - नीच में भेदभाव न रखने का आह्वान किया गया है, और निम्न जाति को उच्च कुल जात से अधिक गुणवान दिखाया गया है, ज्ञानार्जन के क्षेत्र में समन्वय तथा ज्ञान को महत्त्व दिलाने की प्रेरणा देते हुए दलित वर्ग को शोषण - मुक्त करने का वचन दिया गया है । भाग्यवादिता के अतिरिक्त पुरूषार्थ और कर्मठ्यता को प्रधानता दी गई है, साठोत्तरी कवियों ने सांस्कृतिक क्षेत्र में परिष्करण को बनाये रखने की अपील की गई है, कला के क्षेत्र को विस्तृत कर लोगों तक दूर - दूर पहुँचाने का प्रयास किया गया है, इस तरह साठोत्तरी मिथकीय कवियों ने वर्तमान जीवन में हो रहे परिवर्तन और उनसे उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए विश्लेषित मूल्यांकन किया गया है ।

साठोत्तरी मिथक कविता में और पूरे विश्व के मानस पटल पर एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, वर्तमान कवि मिथ की समसामयिक बोध की ओर बढ़ने की अपेक्षा समसामयिक घटनाओं को लेकर मिथ की ओर बढ़ा है, आदिकाल तथा मध्य काल के कवियों ने जिस तरह भाव बोध का आरोपण प्रत्यारोपण अपनी

पौराणिक आख्यानक काव्य के द्वारा किया है, उसी तरह साठोत्तरी कवियों ने युगीन परिस्थितियों को अपनी मिथकीय रचनाओं में विशेष रूप से विश्लेषित किया है, युगीन स्थितियों तथा भावों का मिथ के पात्रों और स्थितियों से साम्य देखते हुए साठोत्तरी मिथक कवियों ने पात्रों के परस्पर संघर्ष तथा राग-द्वेष का विश्लेषण करने के क्रम में मिथ के तानें - बानें की कोई परवाह नहीं, की, बल्कि उन पात्रों के संशयग्रस्त द्वन्द्व को उजागर किया गया है, जो उनके युग तथा निजी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं, "अन्धायुग" के प्रहरी द्वय याचक, "एक कन्ठ विषपायी" का सर्वहत, प्रजा, "संशय की एक रात" की पितात्मा और जटायु आदि कवि की चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसके अलावा प्राचीन मिथों के कुछ उपेक्षित पात्रों ने यहाँ अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है, इस सन्दर्भ में "अन्धा युग" "महा प्रस्थान" "संशय की एक रात" "एक कन्ठ विषपायी" आत्मजयी" "कनुप्रिया" जैसी रचनाओं के पात्र हैं "अन्धा युग" के युयुत्स, विदुर, संजय, गांधारी, बलराम, अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य, कुन्ती आदि के महत्त्व को भुलाया नहीं जा सकता, "एक कन्ठ विषपायी" में वीरिणी, सती, वरूण, कुबेर, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र तथा नन्दी का विशेष महत्त्व है, ये सभी कवि के मानसिक द्वन्द्व का विश्लेषण करते हैं, इसके साथ ही इन कृतियों में साठोत्तरी कविता के लगभग सभी मिथकीय काव्यों में युद्ध तथा हिंसा, का विरोध करते हुए, मानव मंगल की कामना की गई है, युद्धों से पैदा होने वाली विभीषिका तथा संत्रास का चित्रण करते हुए संत्रासजन्य - निरर्थकता का उद्घाटन किया गया है ।

आदिकाल से लेकर मध्यकाल, रीतिकाल पूर्व के आधुनिक कवियों ने तो मिथ के पात्रों को परम्परागत चरित्र के रूप में पेश करने का प्रयास किया था, जब कि साठोत्तरी मिथक कवियों ने अपने समय के मिथ पात्रों को खोजने का प्रयत्न किया, किन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता, कि इसका मूल स्रोत उन्हे स्वतन्त्रता पूर्व के आधुनिक कवियों द्वारा ही प्राप्त हुआ था । साठोत्तरी कवियों के सामने कई कठिन समस्याओं का सामना करना था, ये समस्यायें कोई सामाजिक, राजनैतिक न होकर बल्कि सामसामयिक जीवन का पूरा विश्लेषण करना था, इससे उनका अन्तर्द्वन्द्व, वार्तालाप या चिन्तन की मुद्रा में ही दिखाई पड़ता है, इस क्रम में साठोत्तरी मिथक काव्य कथा काव्य न होकर विचार - काव्य माना जा सकता है, वैसे साठोत्तरी मिथकीय कवियों ने अनेक प्रासांगिक घटनाओं और मनोद्वन्द्वों को उठाकर जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है ।

स्वातन्त्र्योत्तर भारत के कवि पश्चिम के अस्तित्ववादी चिन्तन से काफी प्रभावित हुए हैं, भारत के अतिरिक्त मिथकीय काव्य रचनायें और मिथक काव्यों पर पश्चिम देश के कई कवियों और विद्वानों ने बड़े पैमाने पर काम किया है, वहाँ भी मिथकों के पात्र घटनायें, आदि ऐतिहासिक तौर पर भारतीय मिथकों से काफी हद तक मिलते जुलते हैं, यहाँ तक कि मिथकों और पौराणिक आख्यानों को लेकर वहाँ हर विषय के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से खोजबीन की गई है, और यही नहीं इसके साथ ही वहाँ मौजूदा जनजीवन में फैली विसंगति, उपेक्षा, वैफल्य, विवशता, और निरर्थकता का भरपूर चित्रण और विश्लेषण किया गया है । भारत जैसे देशों में यह कई तरह से विकसित हुआ - बताया गया है, जैसे यह कहीं -कहीं पर घोर व्यक्तिवादिता द्वारा शासन सत्ता के द्वारा हुए अमानवीकरण को अभि-व्यक्ति प्रदान करते दृष्टि गोचर होते हैं । खासकर भारत जैसे गरीब देश में पूँजी-वादी व्यक्ति की अधिक बोलबाला रही है, और यही कारण है, कि पूँजीवादी व्यवस्था में आयी घोर व्यक्तिवादिता के कारण मानवी मूल्यों के विघटन के प्रति गहरी चिन्ता प्रकट की गई है, सामाजिक मान - मूल्यों परिवार तथा अपने आप से अलगाव की मनःस्थितियों का विश्लेषण भी साठोत्तरी मिथक कविता का प्रमुख विषय रहा है, और इन्ही उन तमाम विसंगतियों के कारण देश में फैली बेकारी, स्वार्थ रिश्वतखोरी से वर्तमान युवा वर्ग में फैली हताशा, घुटन, कुन्ठा, संत्रास, ऊब, आक्रोश, ग्लानि, निराशा, जैसी स्थितियों का चित्रण साठोत्तरी मिथक कविताओं में अभिव्यक्त किया गया है, मिथकों के माध्यम से इन मनःस्थितियों को नये धरातल पर अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया गया है, नये मिथकीय कवियों ने भी मिथकों के माध्यम से इन सभी प्रवृत्तियों का विशद विवेचन, विश्लेषण करते हुए मानव की मुक्ति के लिए चिन्तित हैं । साठोत्तरी मिथक कविता के मिथकीय पात्र अपने समय के ह्रासशील मूल्यों के प्रति जागरूक हैं । और उनके परिष्-करण के लिए प्रयत्नरत हैं । इसी अर्थ को लेकर वे अपने जीवन के और सार्थक बनाने की चिन्ता में ग्रस्त नजर आते हैं । इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि साठोत्तरी हिन्दी काव्य में पौराणिक आख्यानों की प्रासंगिक प्रस्तुतियों में मिथकीय पात्रों ने नयी सवेंदना और नयी चेतना को ही मुख्य रूप से व्याख्यापित किया गया है।

साठोत्तरी मिथकीय कवियों ने अपनी अवधारणा को मिथकीय कविताओं में स्पष्ट करते हुए, आज के वातावरण तथा परिवेश में आयी संकीर्णता का अंकन

किया है, और इससे छुटकारा पाने के लिए संसार की सम्पूर्ण मानवजाति की मुक्ति का आह्वान किया है, व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर निर्भर हैं, और इन दोनों का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है, इन्हे एक दूसरे से अलग करने वाली विरोधी इकाइयों का विरोध करके इन्होंने व्यक्ति को अपने तथा समाज के अतीत, वर्तमान, और भविष्य के प्रति जागरूक होकर, एक साथ मिलकर समाज के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने जीवन को सार्थक करने की प्रेरणा भी दी गई है ।

साठोत्तरी मिथक कविता का अस्तित्व उसकी सामाजिक ईमानदारी, एवं विडंबनाओं को कई कवियों ने बड़े ही सार्थक ढ़ग से अभिव्यक्त किया है, कवि धूमिल और कवि विकल कुमार ने पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न अकेलेपन के मिथक को तोड़ा यह कहकर कि " चट्टान से फुटा है झरना / वह गया मेरा अकेलापन / सुरमई आकाश के नीचे / कौन है अकेला / कौन है निस्संग / जब तक बहता है झरना और मडराती है / मेरे जिस्म के आस-पास / एक पहाड़ी कस्बे की गंध / मैं नहीं अकेला / मैं नहीं निस्संग / आदमी का अकेलापन ही उसे असुरक्षा के हॉरर तक ले जाता है। " इस रूप में व्यवस्था उसकी बहुत पेचीदी नियति निर्धारित कर देती है और खुद चैन की वंशी बजाती है इसलिए कवि की यह व्यग्रता "अपने नंगे आरक्षित शरीर को / हजारों - लाखों करोड़ों लोगों से जोड़ूँगा । उसके कवित्व को साठोत्तरी निषेधवाद से मुक्त कर जनवाद के करीब ले आती है ।

साठोत्तरी मिथकीय कविता के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अलग - अलग शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, डॉ0 नामवर सिंह के शब्दों में इसे " साठ की जगह बासठ, तिरसठ, या चौंसठ जो चाहे कह लीजिए क्यों कि यह कोई पत्र का मुहूर्त नहीं है, राजनीतिक स्तर पर इसे चीनी या पाकिस्तानी हमले से जोड़ने से लेकर भी ज्यादा बहस नहीं है, और न बहस है नेहरू की मृत्यु-तिथि से इसका तालमेल बैठानें के सवाल को लेकर विभाजन का आधार कोई भी घटना मानी जाए तथ्य यही है, कि छठे दशक के साथ युगान्त की धारणा पुष्ट हो जाती है, जिसे सुविधा के लिए राजनीतिक भाषा में नेहरू युग का अन्त कह सकते हैं । और इसी विषय पर चर्चा करते हुए डॉ0 परमानंद श्रीवास्तव लिखते हैं कि सन् साठ के बाद की कविता नयी काव्य संभावनाओं के प्रारम्भ से नयी कविता के अन्त

का सूचक है । किन्तु नयी कविता " मर चुकी है " या मरना सन्न है " - यह कहने से अधिक उपयोगी होगा नयी कविता और व्यापक रूप से आज की कविता की संभावनाओं और रूढ़ियों की समीक्षा करना, इसके साथ यह भी देखना कि इतिहास की वे कौन - सी छद्मवेशी प्रवृत्तियाँ हैं जो नयी काव्य - प्रवृत्तियों में घुसी हुई हैं, और उन्हें असमय ही जर्जर किए दे रहीं है, डॉ० चन्द्रकान्त बांदिव डेकर ने भी यह स्वीकार किया है, कि साठोत्तरी कविता का तेवर मिजाज रूप, विन्यास, भाषिक - संरचना सब कुछ परिवर्तित होता दिखाई पड़ता है। यद्यपि इस कविता के वाक्य को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान नयी कविता के कुछ कवियों ने किया है, फिर भी लगता है, साठोत्तरी कविता को अपना एक विशिष्ट चेहरा मिल गया है, कवि अजित कुमार साठोत्तरी कविता को एक नये दौर की शुरूआत मानते हैं, इसके सम्बन्ध में वह लिखते हैं, कि पिछले दिनों कुछ लोग यह कहते कहलवाते रहे हैं, कि सन् साठ की हिन्दी कविता में एक नया दौर शुरू हो गया है, और इस कथन में ध्वनि यह भी रही है, कि नयी कविता का आन्दोलन अथवा युग समाप्त हो गया है, यदि यह बात सन् साठ के बाद या साथ - साथ प्रकाश में आने वाले लेखकों द्वारा कही गई होती तो शायद इस दावे को आत्म - प्रचार या आत्म प्रसंशा की कूड़ा - टोकरी में डाल घूरे पर फेंका जा सकता था, लेकिन जब नयी कविता के कुछ समर्थ कवियों, आलोचकों और पैरोकारों को ही हम ऐसा कहते सुनते हैं, तो गम्भीरता के साथ इस पर सोचने के लिए विवश हो जाते हैं ।

लक्ष्मीकान्त वर्मा साठोत्तरी पीढ़ी को पूर्ववर्ती पीढ़ी से अलगाते हुए इसे "नये सन्दर्भ का साहित्य" कहना उचित समझते हैं, इसके सम्बन्ध में उन्होंने एक टिप्पणी की है, कि मैं समझता हूँ साठोत्तरी पीढ़ी का अधिकांश साहित्य एक भिन्न स्तर का ही नहीं सर्वथा नये सन्दर्भ का साहित्य है, यह पूरा साहित्य उस पीढ़ी का है जो अपराजेय विवशता की स्थिति में जन्मी है, आज भी उसी विवशता को भोग रही है, उनके लिए " विवशता " या "विसंगति" या "विघटन" "आतंक" "भ्रष्टाचार" अनुभव नहीं, जीवित संस्कार है, उन्हे स्वप्न मोह कभी हुआ ही नहीं इसी लिए वे स्वप्नभंग की वेदना को भी नहीं जानते, आखिर जो कुछ भी आज रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, कैलाश वाजपेयी और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखते हैं, वह वही नहीं है, जो आज से दस वर्ष पहले भी लिखा करते थे, परिवर्तन उनमें भी आया है, आज परिवेश का दबाव उन पर भी है, स्वप्न-भंग के बाद की

स्थिति में उनकी अपनी आत्म - रति की प्रक्रिया भी टूट रही है । आज देश एक ऐसा विषय बन गया है, जिस पर सभी लिखने के लिए मजबूर हैं । साठोत्तरी कविता को पूर्ववर्ती कविता से अलग बताते हुए डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी कहते हैं कि हिन्दी कविता में प्राचीनता और आधुनिकता के बीच चलने वाला संघर्ष सन् साठ के बाद आधुनिकता और समकालीनता के संघर्ष में बदलने लगा । सौन्दर्यवाद की परम्परा का अभिजात्य से ढका खोखलापन प्रकट हो चुका था, इस लिए नयी कविता का पतन सुनिश्चित हो गया । भाषा की समकालीन संरचना और चीजों के अन्दर छिपे राजनीतिक अर्थ की समस्याओं को उभारते हुए धूमिल की कविताओं ने स्पष्ट सूचना दी कि खन्डिता और धूसर काव्यात्मक बिम्बों का जमाना लद चुका है । शहीद होने की दिखावट भी पकड़ी जा चुकी है और मूल्य विहीन आक्रोश अपना कोई अर्थ नहीं रखता, यहाँ से कविता की ऐसी परम्परा आरम्भ होनी थी, जो एक तरफ शिल्पगत प्रयोगों को जीवन के वस्तुगत मूल्यबोध से जोड़कर भाषा की सांस्कृतिक सामर्थ्य बढ़ाये, दूसरी ओर जीवन की राजनीतिक - आर्थिक समस्याओं को कला के स्तर पर समकालीनता की समस्याओं के रूप में पुनः प्रस्तुत करें ।

साठोत्तरी काव्य - भाषा के ही विविध उपयोग बिम्ब, प्रतीक, का रूप धारण करते हैं, इसलिए इनके रूप में काव्य - भाषा की विविध क्षमताएँ परिभाषित होती है, अभिव्यक्ति के ये विभिन्न तत्त्व काव्यानुभव के अनुकूल विभिन्न काव्य रूपों में संश्लिष्ट रूप प्राप्त करते हैं, अतः साठोत्तरी कविता के अभिव्यंजना शिल्प के प्रमुख तत्त्व हैं, काव्य भाषा, बिम्ब, प्रतीक, मिथक, और काव्य रूप, कविता की विषय वस्तु और अभिव्यंजना शिल्प के बीच अन्तर बताया गया है, किन्तु तात्त्विक दृष्टि से कविता की विषय वस्तु और अभिव्यंजना शिल्प के बीच अन्तर मानना गलत है । क्यों कि काव्य एक अत्यन्त संश्लिष्ट सृजन है । किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से, विशेष रूप से कविता के विश्लेषणात्मक अध्ययन की दृष्टि से न केवल कविता की विषय - वस्तु एवं अभिव्यंजना शिल्प का विभाजन आवश्यक है, अपितु अभिव्यंजनाशिल्प का विभिन्न उपतत्त्वों में विभाजन आवश्यक है, बिना इस प्रकार के विभाजन के कविता का विश्लेषणात्मक अध्ययन सम्भव नहीं हैं ।

इन दोनों स्थितियों को काव्य - भाषा के विकास में भी परिलक्षित किया जा सकता है, कविता की विषय - वस्तु में परिवर्तन हो जाने पर अभिव्यक्ति

के माध्यम से परिवर्तन अनिवार्य हो गया । यह परिवर्तन साठोत्तरी हिन्दी काव्य - भाषा की आधार भाषा में हुआ । ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली ने ले लिया, काव्य - वस्तु के अनुकूल इस काल की काव्य - भाषा मुख्यतः अभिधात्मक स्थूल, वर्णनात्मक और सपाट है, इसे लाक्षणिक वक्रता, सूक्ष्म सांकेतिकता, चित्रात्मकता और सुखद मधुरता - छायावाद काल में मिली । साठोत्तर कविता में यह प्रवृत्ति और अधिक विकसित हुई, अपनी "सपाट बयानी" में भी साठोत्तर काव्य - भाषा बहुत जटिल बनी हुई है, इन तथ्यों को प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध में अनेक पुष्ट प्रमाणों से सिद्ध किया गया है ।

साठोत्तरी हिन्दी कविता के अभिव्यंजना शिल्प में प्रयोग करते समय कई कवियों ने उर्दू, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयलम, अंग्रेजी जैसी अन्य भाषाओं के माध्यम से अन्य यूरोपीय भाषाओं से प्रेरणा ग्रहण की है ।

जहाँ तक भारतीय वाङ्मय की सम्पन्नता का प्रश्न है, साठोत्तरी हिन्दी कविता ने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से हिन्दी जगत को अनेक तेजस्वी व्यक्तियों अन्तर्कथ्यों एवं अन्तर्द्वन्दों से सम्पन्न किया है, सर्वाधिक पौराणिक पात्र अपनी - अपनी ओजस्विता लिए हुए कवि के चिन्तन पटल पर अपने साभिप्रायी व्यक्तित्व को व्यंजित करते हुए हिन्दी कविता को सामयिक सन्दर्भों से जोड़कर एक सार्थक भूमिका प्रदान करते हैं ।

इस प्रकार के आख्यानक चरित्रों में प्रमुख व्यक्तित्व हैं - "अंगद, अहिल्या, सीता, उर्वशी, द्रोपदी, अभिमन्यु, अर्जुन, इन्द्र, वरुण, एकलव्य, कंस, कच, कर्ण, शबरी, कुन्ती, कुब्जा, रूक्मणी, कुंभकर्ण, लवकुश, कृष्ण, गंगा, दुर्वाशा, गणेश, गांधारी, घटोत्कच, चाणक्य, चर्वाक, जनक, जनमेजय, जरासंध, तारा, दधीचि, दमयन्ती, दशरथ, दिलीप, देवदास, दुःशासन, दुर्योधन, धृतराष्ट्र, दुष्यन्त, द्रोण, भीष्म, नकुल, नचिकेता, नरसिंह, नहुष, नारद, नृग, परशुराम, परीक्षित, पांडु, पूतना, पृथु, प्रहलाद, बलराम, बलिराजा, बुद्ध वृहस्पति, शुक्र, भगीरथ, भीम, भीष्म, मस्यासुर, मनु, मारीचि, मेनका, मेधा, ययाति, यशोदा, युधिष्ठिर, रघु, राधा, राम, रावण, लक्ष्मण, वाराह, वायु, बाल्मिकि, वात्स्यायन, विदुर, विभीषण, विश्वामित्र, व्यास, अगत्स्य, अग्नि, शकुन्तला, शिव, सुग्रीव, बाली, हरिश्चन्द्र, बुद्ध, राहुल इत्यादि पात्र हमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थव वेद, जैमिनी,

उपनिषद ब्राह्मण, महा भारत, भागवत, मत्स्य पुराण, में मिलते हैं । ॥१॥ जो आज के समसामयिक घटनाओं को मिथकीय रूप प्रदान करते हैं ।

इन अधिकांश चरित्रों को लेकर पृथक रूप से या समिष्टगत काव्य-चर्चाएँ हो चुकी हैं, प्रबंधात्मक या स्फुट रूप से इन्हें काव्यांकित किया जा चुका है, इन सभी पौराणिक व्यक्तित्वों ने साठोत्तरी हिन्दी कविता को एक सर्वथा नवीन उपजीवी कथा वस्तु प्रदान की है, जिससे भारतीय मनीषा का चिन्तन विकास हुआ है । अधिकांश पौराणिक चरित्र आधुनिक सन्दर्भों में अपनी नई अर्थवत्ता को लेकर जब सामने आते हैं, तो उनके अन्तर्द्वन्द्व मनोमंथन और आंतरिक संघर्ष की छटपटाहट हम साफ अनुभव करते हैं, और यही अनुभव हमें कुछ न कुछ करने की अनु-प्रेरणा से अनुबंधित करती है ।

साठोत्तरी मिथक कविता के संदर्भित चरित्रों की यही सार्थक भूमिका इस काल खन्ड को नए चिन्तन से संलग्न करती है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में साठोत्तर कविता के चतुर्दिक अध्ययन मनन के बाद निष्कर्षत: यह तथ्य उद्घाटित किया है, कि हिन्दी कविता को मिथक प्रयोगों ने नया चिन्तन नई प्रेरणा और नया कथ्य प्रदान किया है ।

पाठक के सामने उसके जाने पहचाने पौराणिक पात्र अपनी सामयिक समस्याओं को लेकर जब सामने आते हैं तो पाठक उन्हे प्रकृतिस्थ होकर स्वीकार लेता है । दूसरी ओर कवि स्वयं भी इन पौराणिक पात्रों के ओजस्वी व्यक्तित्वों के प्रभामन्डल की चमचमाहट में अपने हृदयस्थ अनुभवों को प्रकाशित करता है, तो उसका यह अनुयोजन एक सार्थक पृष्ठभूमि में सहजता से स्वीकार्य हो जाता है ।

साठोत्तरी हिन्दी काव्य में कवि की एक निश्चित मानसिकता रही है जो परिवर्तित सामाजिक मूल्यों के समानान्तर चली है, युगपरिवर्तन के साथ - साथ कविता के कथ्य एवं शिल्प दोनों में ही अन्तर आया है, कवि धर्म ने इसे सादर स्वीकार किया है किन्तु अपने कथ्याभिप्राय को अधिकाअधिक संबंध बनाने की प्रक्रिया में जो विविध प्रयोग हुए हैं, उनमें पौराणिक आख्यानों की युगीन - प्रस्तुतियाँ सर्वाधिक सक्षम बनकर उभरा है । अनेक अधिकारी तथा प्रतिष्ठित कवियों ने इस सन्दर्भ में अपने समीष्ट कथ्य को पौराणिक पात्रों के व्यक्तित्व के प्रतीकार्थों

में अथवा परिवर्तित कथ्यों एवं विश्लेषणों के परिप्रेक्ष्य में बड़ी ही बजनदार के साथ प्रस्तुत किया है ।

यह सम्पूर्ण अध्ययन इस दिशा में एक सर्वथा मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करता है जो राष्ट्रीय स्तर पर इस काव्य प्रयोग की महत्ता प्रतिपादित करता है। संदर्भानुसार उत्तर राष्ट्रीय काव्य प्रयोगों की तथा समालोचनाओं की भी सहौचित्य चर्चा की गई है ।

इस प्रबंध ग्रन्थ के द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि साठोत्तरी हिन्दी कविता में जितने भी नवीन प्रयोग हुए हैं, वे सब इस के सामने अल्पजीवी या हलके सिद्ध हुए हैं, स्थापित कवियों की आख्यानक काव्यकृतियाँ ही अपेक्षाकृत अधिक समादृत हुई हैं ।

जहाँ तक अर्थवत्ता का प्रश्न है, वहाँ यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि प्रत्येक कवि की अपनी - अपनी विचार दृष्टि होती है, अपनी - अपनी "पकड़" और "मार" होती है, उसी के अनुरूप आख्यानक रचनाओं की सार्थकता या गंभीरता भी सामने आई है। कहीं - कहीं आख्यानक रचनाएँ अतिआवश्यक होकर इतरार्थ को स्पर्श तक नहीं कर पातीं वे मात्र पिष्टपेषण और पुनर्कथ्यों की उबासी से भरी रहती हैं । छन्दानुबन्धन के जालों में सस्ती तुकबन्दी ने भी कुछेक आख्यानक रचनाओं की दरिद्र प्रस्तुतियाँ सामने रखीं हैं किन्तु हिन्दी के साठोत्तरी कवियों ने जब विचारवान कविता प्रस्तुत करते हुए आख्यानक पात्रों का साहचर्य या आख्यानक कथ्यों की सन्निहित स्वीकारा है, तब ये मिथक प्रयोग कविता में " सोने में सुहागा " भी बन गए हैं ।

कविता कवि मन की भावात्मक विचार यात्रा है, इसमें कवि का काव्य सामर्थ्य, उसका चिंतन, उसका कलाकार, उसकी संवेदनाएँ तथा उसकी प्रस्तुति चातुर्य अपनी-अपनी "औकात" के अनुरूप उजागर होता है, प्रस्तुत शोधाध्ययन में विविध रूपों में इस तथ्य को स्पष्ट करने का यत्न किया गया है ।

वैसे तो अपने अभिप्रेत कथ्यालोचन में मैंने अधिकांश सम्बन्धित काव्य को स्पर्श किया है किन्तु फिर भी अध्येता की अपनी एक सीमा रेखा और पहुँच होती है। सम्भव है कि कोई परमविशिष्ट संदर्भ इस प्रसंग में अछूता रह गया हो। मेरे अध्ययन सामर्थ्य के दौर्बल्य को देखते हुए सुधी पाठक इसे गम्भीरता से ग्रहण नहीं करेंगें। ऐसी मेरी विनम्र अभ्यर्थना है ।